रबड़ समाचार

जनवरी-दिसंबर 2018

वार्षिक अंक

मैं सैनिक बन जाऊंगा

मैं सैनिक बन जाऊंगा।

सेनानी वर्दी पहनूंगा, बूट करेंगे ठक-ठक-ठक।
कंधे से बन्दूक लगेगी, मुन्नी देखेगी इक-टक।
दुश्मन का मैं दमन करूंगा, जय की जोत जगाऊंगा।
मैं सैनिक बन जाऊंगा।

चुन्नू-मुन्नू तुम भी आओ, सेना एक सजाएंगे।
हिंद देश के प्रहरी हैं हम, सीमा पर डट जाएंगे।
तुम रिपु-दल की थाह लगाना, मैं बंदूक चलाऊंगा
मैं सैनिक बन जाऊंगा।

मुन्नी हमको तिलक करो तुम, आज जा रहे हम रण में।
दुश्मन को पीछे पटका दें, यही लालसा है मन में।
तन-मन का मैं अर्ध्य चढ़ा कर, मां का मान बढ़ाऊंगा।
मैं सैनिक बन जाऊंगा।

हिम-मंडित यह शुभ्र हिमालय, ऊंचा भाल हमारा है।
नीच शत्रु ने मलिन आंख से, इसको आज निहारा है।
अरि-मर्दन कर उसी रक्त से, मां को तिलक चढ़ाऊंगा।
मैं सैनिक बन जाऊंगा।

सत्यवती शर्मा

चुने हुए राष्ट्रीय गीत से साभार

रबड़ बोर्ड

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

कोट्टयम - 686 002, केरल

पी बी नं.1122

दूरभाष : (0481) 2301231

फैक्स : 91 481 2571480

ई मेल : ol@rubberboard.org.in

वेब साइट : www.rubberboard.org.in

अधयक्ष

डॉ के एन राघवन आई आर एस

संपादक

जी सुनील कुमार

सहायक निदेशक (रा भा)

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से रबड़ बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए।

पूर्ण धारणा के साथ बोला गया 'नहीं' सिर्फ दूसरों को खुश करने या समस्या से छुटकारा पाने के लिए बोले गए 'हाँ' से बेहतर है। - *महात्मा गांधी*

मुख पृष्ठ : रबड़ बागान

रबड़ समाचार

बुलेटिन

वार्षिक अंक

जनवरी - दिसंबर 2018 *अंक 122*

इस अंक में

संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण	4-5
अंतराफसलन के लिए रबड़ की नई रोपण विधि	6-7
टंकित हिंदी पाठ को कैसे सुनें?	8-9
आत्मा और शरीर की भूमिका (कविता)	10
महात्मा गाँधी और वर्तमान चिंतन	11-13
पथ मेरा निर्वाण बन गया (कविता)	13
राजभाषा कार्यान्वयन की समस्यायें	15-17
हिंदी दिवस समारोह	18-22
चिकित्सा : शरीर विज्ञान नोबेल पुरस्कार	23

संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 24.05.2018 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया। कोट्टयम स्थित दो अन्य कार्यालय नैशनल इंश्योरेंस कंपनी इसके साथ केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान का और दिनांक 23.05.2018 को आलप्पुषा स्थित युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, ऑरियन्टल इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड तथा आयकर कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव, माननीय उपसमिति के संयोजक रहे। डॉ ए संपत, सांसद और प्रोफसर चिंतामणी मालवीय, सांसद निरीक्षण में शामिल थे। श्री एस एस राणा के नेतृत्व में संसदीय राजभाषा समिति सचिवालय के अधिकारीगण भी बैठक में उपस्थित थे।

श्रीमती ऊर्मिला हरित, संयुक्त निदेशक (रा भा) ने निरीक्षण के दौरान वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, नई दिल्ली का प्रतिनिधित्व किया।

श्री एन राजगोपाल, प्रभारी सचिव रबड़ बोर्ड ने रबड़ बोर्ड से समिति के सदस्यों के प्रश्नों का उत्तर दिया। डॉ जयिंम्स जेकब, निदेशक अनुसंधान, श्रीमती पी सुधा, निदेशक प्रशिक्षण, श्री सी साबु, संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त, श्री के सी सुरेंद्रन, प्रभारी निदेशक वित्त, श्री विश्वनाथ प्रभु,

प्रभारी निदेशक अनुज्ञापन व उत्पाद शुल्क, श्री जयदेव आनंद, उप निदेशक ई डी पी, श्रीमती एम जे लिस्सी, उप निदेशक सांख्यिकी एवं योजना

केरल के पारंपरिक नृत्यों का प्रस्तुतीकरण किया साथ ही कलरी पयट्टु का प्रस्तुतीकरण भी किया था। कार्यक्रम में समिति के सदस्यों, अधिकारी

और श्री जी सुनील कुमार, सहायक निदेशक रा भा ने निरीक्षण बैठक में बोर्ड की ओर से प्रतिभागिता की।

23 मई रात को समिति के सम्मान में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया था। जिसमें

गण, निरीक्षण में सम्मिलिय कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी और कोट्टयम के जिला कलेक्टर भी भाग लिए।

अंतराफसलन के लिए रबड़ की नई रोपण विधि

डॉ एम डी जेस्सी, भास्कर दत्ता, डॉ सुशील कुमार डे, डॉ जेइम्स जेकब
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान

रबड़ बोर्ड ने रबड़ बागानों की पूरी अवयस्क अवधि के दौरान खाद्य फसलों की अंतरासस्यन करने में सहायक एक नई रोपण विधि का विकास किया है। अंतराफसलों के लिए अपेक्षित सूर्यप्रकाश उपलब्ध होने के तरीके में रबड़ रोपण करने के रबड़ बोर्ड की सिफारिश इस आलेख में दी गई है।

आमतौर पर रबड़ लगाने के लिए स्वीकृत विधि के अनुसार प्रारंभ के तीन या चार वर्षों में ही रबड़ बागानों में खाद्य फसलें अंतराफसलों के रूप में लगायी जा सकती है। उसके बाद रबड़ बागानों में प्राप्त होने वाले सूर्यप्रकाश का परिमाण भारी रूप से घट जाता है। इस कारण से तुलनात्मक रूप से अधिक सूर्यप्रकाश की अपेक्षा की जानेवाली फसलें रबड़ बागानों में अंतराफसल के रूप में लगायी नहीं जाती हैं।

सामान्य रूप से रबड़ की अपक्व अवधि सात साल है। पूरी अपक्व अवधि के दौरान खाद्य फसलों की अंतरा खेती करने के लिए भारतीय रबड़ अनुसंधान

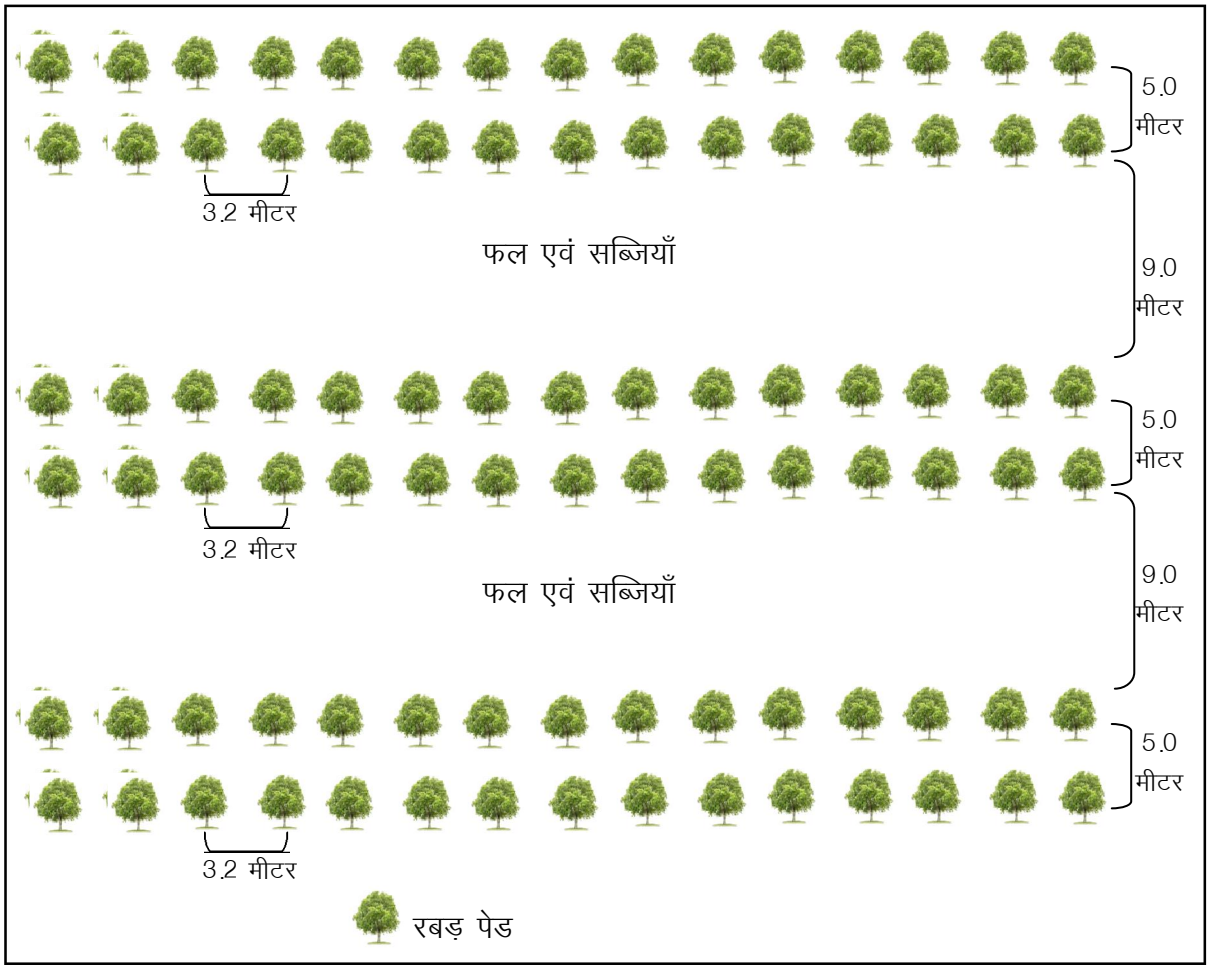

संस्थान ने एक नई रोपण विधि का परीक्षण किया। वर्ष 1993 के दौरान रबड़ बोर्ड के चेत्तक्कल स्थित केंद्रीय परीक्षण स्टेशन में अध्ययन का आरंभ हुआ तथा वर्ष 2009 में त्रिपुरा के प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन में भी परीक्षण दोहरा दिया। इन परीक्षणों के आधार पर रबड़ बागानों में अधिक अवधि तक अंतरा फसलों की खेती करने के लिए उपयुक्त रोपण विधि का विकास रबड़ बोर्ड ने किया।

नई रोपण विधि

रबड़ बोर्ड द्वारा अनुशंसित नई विधि के अनुसार दो कतारों में जोडी के रूप में रबड़ के पौधे लगाये जाते हैं। एक जोडी के कतारों के बीच पाँच मीटर अंतर होना चाहिए। दो जोडी कतारों के बीच का अंतर 9 मीटर होना चाहिए। कतारों में पौधों के बीच 3.2 मीटर की दूरी होनी चाहिए। इस विधि में एक हेक्टेयर में 440 पौधे लगाए जा सकते हैं।

दो कतारों के बीच ज्यादा अंतर हो तो वहाँ सूर्यप्रकाश की उपलब्धता अधिक अवधि तक रहेंगी। इसके लिए ही नई विधि के अनुसार दो जोडा कतारों के बीच नौ मीटर अंतराल का सिफारिश किया है। इस जगह पर पूरी अपक्व अवधि में अंतराफसलों की खेती की जा सकेगी। इसके लिए अंतराफसलों का ध्यानपूर्वक चयन करना चाहिए। अधिक सूर्य प्रकाश की जरूरतमंद सब्जी, केला आदि आरंभिक वर्षों में तथा बाद के वर्षों में आंशिक सूर्य प्रकाश में बढनेवाले जिमीकंद, अरवी, रतालू जैसे फसलों की खेती की जा सकती है। साधारणतया रबड़ लगाने के बाद के मात्र 3 वर्षों तक अनन्नास अंतराफसल के रूप में रखे रखते हैं। लेकिन बोर्ड की नई अनुशंसा के अनुसार अंतराल का पालन करके रबड़ का रोपण करें तो पूरे सातों वर्ष बागान में अनन्नास की खेती की जा सकती है। अंतराफसलों की खेती के लिए रबड़ बोर्ड द्वारा जारी मार्गदर्शनों का पूरा पालन करना चाहिए।

इस तरह अधिक अवधि तक अंतराफसलों की खेती किए गए बागों में आम तरीके से बढाये बागानों के पेडों की अपेक्षा में बेहतर वृद्धि देखी गयी। बागानों की मृदा की उर्वरता में कमी नहीं होती है। यही नहीं सूक्ष्माणुओं की गिनती में वृद्धि देखी गई। उसी तरह आम विधि के अंतराल (6.7x3.4 मीटर) में लगाने वाले रबड़ से तुलना करने पर उत्पादन में भी कोई कमी नहीं हुई है।

चुटकुले

मेरी बला से

एक दिन चंपक भाई ढब्बूजी से मिलने आए। बातों-बातों में ही कहने लगे, ôढब्बूजी! सुना है, कल आपके और चंदूलालजी के बीच हाथापाई हो गई?ô

ढब्बूजी ने कहा, ôहाँ! उसने मेरी बीवी को ôखूबसूरत बलाô कहने की जुर्रत की! अब आप ही बताइए, क्या मेरी बीवी खूबसूरत है?ô

तोता या तमाचा

चंपक भाई एक तोता लाए। ढब्बूजी उनसे मिलने गए तो तोते को देखकर पूछ बैठे, ôयह तोता क्यों ले आए?

ôढब्बूजी, यह ऐसा-वैसा नहीं, एक चमत्कारी तोता है। चंपक भाई ने बताया।

ôवह कैसे?

ôअगर आप इसका दायाँ पैर खींचेंगे तो यह सत्तारूढ़ पार्टी पर गालियाँ बरसाएगा और अगर बायाँ खींचेंगे तो यह विरोधियों पर बरस पड़ेगा।

ôऔर मैं इसके दोनों पैर खींच लूँ तो? ढब्बूजी ने पूछा।

उल्लू कहीं के! तेरी सातों पीढियों की खबर ले डालूँगा! जवाब तोते ने दिया।

टंकित हिंदी पाठ को कैसे सुनें?

श्याम सुंदर कथूरिया, संयुक्त निदेशक राजभाषा, कर्मचारी राज्य बीमा निगम

इस लेख का शीर्षक आपको कुछ अटपटा लग रहा होगा। वस्तुतः हिंदी के सॉफ्टवेयर और टूल्स की श्रृंखला में यह विषय भी महत्वपूर्ण है। कभी-कभी हमें लगता है कि किसी विस्तृत और लंबी सामग्री, जैसे - कोई रिपोर्ट, विवरण या साहित्यिक विधा की सामग्री को पढने में हम आपना कीमती समय क्यों लगाए? अचछा हो कि कोई हमें वह पाठ पढकर ही सुना दे। इससे हम उस पाठ को सुनते-सुनते साथ में कोई दूसरा काम भी कर सकते हैं। स्मय के अभाव भरी ज़िंदगी में अपनी उत्पादकता बढाने का यह एक बेहतर विकल्प हो सकता है।

अब सूचना प्रौद्योगिकी ने इस कल्पना को साकार कर दिया है। हम हिंदी में यूनिकोड में टाइप की हुई सामग्री को यदि óप्रवाचक राजभाषाô नामक सॉफ्टवेयर में डाल दें तो हमारा कंप्यूटर हमें स्पष्ट आवाज़ में पढकर सुनाता जाएगा। सरल शब्दों में कहें तो यह एक प्रकार का reader या Reciter है। तत्संबंधी विस्तृत विवरण इस प्रकार है।

प्रवाचक राजभाषा

इसे राजभाषा विभाग, भारत सरकार की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in हिंदी में ई टूल्स या http://hindietools.nic.in/?0010 पर प्रवाचक - राजभाषा (हिंदी टेक्स्ट से हिंदी स्पीच) को क्लिक करने के पश्चात दिए लिंक http://pravachak-rajbhasha.rd-aai.in पर पंजीकरण की औपचारिकता पूर्ण करने के बाद अपने कंप्यूटर पर डाउनलोड करके दिए गए स्थान पर पाठ को टंकित करके या किसी पाठ को पेस्ट/करके सुना जा सकता है। इसमें बोलने की गति को धीमा या तीव्र किया जा सकता है।

प्रवाचक - राजभाषा एक हिंदी टेक्स्ट-टू-स्पीच (टीटीएस/स्पीच संश्लेषण)प्रणाली है। इसे एप्लाइड एआई समूह, सी-डैक, पुणे द्वारा विकसित टूल है। यह हिंदी पाठ (यूनिकोड) को हिंदी भाषण में बदल देता है। प्रवाचक - राजभाषा में वेब पेज या टेक्स्ट /डॉक फाइल से चुने गए हिंदी (यूनिकोड) पाठ को पढने की सुविधा है। बडी और लंबी टंकित हिंदी सामग्री को यदि पढने का समय न हो तो उसे सुन कर समझा जा सकता है। इसी प्रकार दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिए तो यह वरदान है, जो पढ तो नहीं सकते परंतु सुन सकते है।

मुख्य विशेषताएं :

प्रवाचक-राजभाषा एक यूनिकोड संगत सिस्टम है।

वेब, ई -मेल (माइक्रोसॉफ्ट आउटलुक 1997-2007) और स्टैंडएलोन दस्तावेज़ से सामग्री पढने में समर्थ है।

वर्तनी और उच्चारण में भिन्नता की पहचान करने के लिए इंटेलिजेंट सिस्टम है।

प्ले गति और मात्रा बदलने के लिए सुविधा प्रदान की गई है।

एमएस वर्ड फाइल, टेक्स्ट फाइल्स, एचटीएमएल फआइल जैसे स्टैंडएलोन दस्तावेज़ों का समर्थन करता है।

फोनेटिक, इंस्क्रिप्ट, और रेमिंगटन में टाइप करने के लिए वेब नरेटर, ई-रीडर और इ-मेल रीडर में वर्चुअल कीबोर्ड की सुविधा प्रदान की गई है।

टेक्स्ट-टु-स्पीच इंजन, प्रवाचक-राजभाषा में निम्नलिखित तीन अनुप्रयोग शामिल हैं :

वेब नेरेटर

वेब नेरेटर, उपयोगकर्ता द्वारा चयनित

वेब पेज की सुविधा युक्त है। उपयोगकर्ता के पास वांछित गति पर कथन को सुनने की स्वतंत्रता है, क्योंकि वह स्पीड बटन का उपयोग करके बोलने की गति को बदल सकता है।

ई-रीडर

एक कंप्यूटर में संग्रहीत देवनागरी दस्तावेज़ों को एस उपकरण का उपयोग करके सुना जा सकता है। ई-रीडर निम्न फाइल प्रारूपों - txt फाइल, .doc फाइल, .docx फाइल, .rtf फाइल, .ppt फाइल, .xls फाइल या .xlsx फाइल को पढकर सुना सकता है। ई-रीडर उपयोगकर्ता को सिस्टम पर पहले से मौजूद फाइल को पढने की स्वतंत्रता प्रदान करता है या उपयोगकर्ता वांछित पाठ टाइप कर सकते हैं।

ईमेल - रीडर

यह उपकरण उपयोगकर्ता को देवनागरी स्क्रिप्ट में ई - मेल की सामग्री को पढने के लिए सक्षम बनाता है। इसे óमाइक्रोसॉफ्ट आउटलुकô के ई-मेल संदेशों को बताने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

स्क्रीन की बोर्ड पर

प्रवाचक- राजभाषा में , जो हिंदी टाइपिंग के लिए सहज नहीं हैं, उनके लिए उपयोगकर्ता अनुकूल टंकण विकल्प है। इसमें इसके सभी अनुप्रयोगों में चयन-और-टंकण का औन-स्क्रीन कीबोर्ड है। यहां तीन विकल्प हैं।

इंस्क्रिप्ट कुंजीपटल

फोनेटिक की बोर्ड

रेमिंग्टन की बोर्ड

इस सॉफ्टवेयर का प्रयोग करने के लिए सिस्टम पर कुछ निम्नलिखित न्यूनतम आवस्यकताएं होनी चाहिए :-

ऑपरेटिंग सिस्टम

माइक्रोसॉफ्ट विंडोज़ एक्सपी, विस्टा, विंडोज 10, 8.1/8 7 32/64 बिट

हार्डवेयर

प्रोसेसर : पेंटियम 4 या ऊपर

रैंम : 1 जी बी

मल्टीमीडिया : ऑडियो आउटपुट डिवाइस (स्पीकर्स)

सॉफ्टवेयर

इंटरनेट एक्सप्लोरर 6 और ऊपर

माइक्रोसॉफ्ट आउटलुक

माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस सूट

यह सॉफ्टवेयर निशुल्क है तथा प्रयोग करने में भी सरल है। हम इसे अपने दैनिक जीवन में आवश्यकतानुसार उपयोग करके अपना काम आसान बना सकते हैं।

- इंद्रप्रस्थ पत्रिका से साभार

राजभाषा नियम 1976

नियम 5- हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर-

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिंदी में पत्रादि के उत्तर केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिंदी में दिए जाएंगे।

नियम 8- केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना-

1. कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करें।
2. केंद्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिंदी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृतति का है, अन्यथा नहीं।

आत्मा और शरीर की भूमिका

आर एम षण्मुगम चेट्टियार
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त (सेवा निवृत्त)
रबड़ बोर्ड

शरीर और आत्मा एक हैं
जो किसी के अहंकार, इच्छा और गुणों को नियंत्रित करते हैं?
क्या जीव कोशिका का जीन्स नामी तत्व
आत्मा या शरीर का आधार है?
कौन पाप करता है और कौन पुण्य?
कौन दुःख और सुख को भोगता है?

केवल आत्मा द्वारा ही उसे नहीं किया जाता है।
और न ही केवल शरीर द्वारा उसे नहीं किया जाता है।
आत्मा और शरीर ठीक उसी प्रकार एक साथ प्रकट होते हैं
जैसे कि लौ और बाती एकसाथ जलते हैं।

आंतरिक शक्ति के साथ
बाह्य शक्ति के संघर्ष को हम जीवन कहते हैं।
हमारी प्रार्थनाओं और बलिदानों का कोई आधिपत्य नहीं है।
दोनों स्वतंत्र और एक दूसरे से असंबंधित है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि
केवल आत्मा ही है
जो समूचे जीव जगत में शाश्वत रूप से व्याप्त रहती है।
न तो इसका जन्म होता है न मृत्यु
इसका विकास बाह्य शक्ति से जुडा हुआ है।

निरंतरता में आंतरिक ताकत होती है
बाह्य शक्ति ईश्वर है
उनके पास अपने एजेंडे हैं करने को
उनके लिए आपकी प्रार्थना अप्रासंगिक है।

मृत्यु के उपरांत कोई आत्मा नहीं रहती है
या इसका पुनर्जन्म नहीं होता है।
पाप और पुण्य किसी के साथ नहीं जाते हैं
जन्म और मृतयु आंतरिक संयोग है।
सजीव वस्तुओं का सिद्धांत जीवन है।

उन्मूलन करने को आया था तूफान फिर
लहरों को उडाया मंदिर के ऊपर तक
बादल को ले जाकर गया था वहाँ से
तूफान है शक्तिशाली बादल से प्रभाव में
सिर छुकाया पेड पौधे तीव्र वर्षा से
मिल गयी थी शीतलता ऊषर भूमी को
दिया था प्रभाव कठोर बिजली का
वर्षा है शक्तिशाली तूफान से विनाश में।

बहाया था नदियों ने पानी को ले जाकर
सिर झुकाया वर्षा की गर्व उस समय
समुद्र की गोद पर ले गया सब पानी
नदी है शक्तिशाली तूफान से पानी से।

दृष्टि पड गया बडे पत्थर नदी मध्य
मानव उस पत्थर को तोडते हैं हथौडे से
क्या छोटा हथौडा होते है शक्तिशाली?
मानव दिल है सुदृढ बाधा पार करने में।

महात्मा गाँधी और वर्तमान चिंतन

श्री प्रदीप जुगरान, श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड

भारतीय संदर्भ में जहां परंपराएं तथा मैथोलॉजी की पराकाष्ठा पर तर्क भी घुटने टेकता है, जहां पारंपरिक रूप से परमसत्ता हेतु निवेदन प्रस्तुत किया जाता है, वहां महात्मा गाँधी नाम से एक साधारण मनुष्य जन–जन का पथ प्रदर्शक हो गया। आमजन ने उसे बापू नाम से सर्वसम्मान दिया। सन् 1915 में दक्षिण अफ्रीका प्रवास से वापस आकर जन नायक के रूप में वे प्रतिष्ठित हुए लेकिन उससे पूर्व दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने अपनी विलक्षणता, सरलता से सामान्यजन के हृदय में स्थान बनाया। इतने लंबे समय के बाद सामान्यतः किसी भी बडी हस्ती का नाम आमजन के मन में धुंधला हो जाता है, परंतु गाँधीजी अपने कार्यों तथा विचारों से वैश्विक आधार पर वर्तमान हैं। उनके वैचारिक परिणयन की जितनी आवश्यकता आज है उससे कहीं ज्यादा प्रासंगिकता हमें भविष्य में भी दृश्यमान होगी। मिथकीय रूप में कई पूज्य पुरुषों की देवरूप में आराधना होती है, परंतु गाँधीजी का प्रत्येक मन में जो स्थान है वह उस देवपूजा से कहीं अधिक है।

गाँधीजी उत्कृष्ट साहित्यकार भी थे। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन में उन्होंने आमजन की समस्याओं को उठाया। समन्वय की जो भावना हमें पूर्ववर्ती गोस्वामी तुलसीदासजी में दिखती है, वही स्वरूप गाँधीजी में दृश्यमान होता है। गाँधीजी भगवद्गीता के कर्मवाद से अति प्रभावित रहे। उनके जीवन में निम्न पुस्तकों का प्रभाव रहा– बाइबिल और ड्यूटीज ऑफ मैन (लेखक-मजीनी), ऑन द ड्यूटीज ऑफ सिविल डिसओबीडियन्स (लेखक–एच.डी. थोरो), द की टू थियोसॉफी (लेखिका-मैडम ब्लावाट्स्की), पॉवर्टी एण्ट अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया (लेखक–दादाभाई नौरोजी), द लाइट ऑफ एशिया (लेखक– एडिवन आर्नल्ड), अन टू दा लास्ट (लेखक– एडिवन आर्नल्ड) आदि। इस प्रकार गाँधीजी विश्व के सभी साहित्य से परिचित रहे व आदर्श को ग्रहण किया। जब भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत होकर आमजन ने आतंकवाद और हिंसावाद के रास्ते का वरण किया तब गांधीजी ने 1908 में लंदन से दक्षिण अफ्रीका जाते समय जहाज पर ही हिंद स्वराज्य नामक एक छोटी सी पुस्तिका लिखी। इस पुस्तक को सर्वोदय विचार का घोषणापत्र माना गया था। इसमें घृणा के स्थान प्यार, दूसरों की हत्या के स्थान पर आत्म बलिदान और पशुबल की जगह आत्मबल का संदेश प्राप्त होता है। दक्षिण अफ्रीका से वकालत छोडकर अपने देश में आमजन को आवाज देने हेतु वे 9 जनवरी 1915 को भारत लौटे।

महात्मा गाँधी ऐसे युग पुरुष थे जिन्होंने सुसुप्त भारत को नींद से जगाया। गांधीजी ने आमजन के बीच पहुँचकर सत्य, अहिंसा तथा प्रेम की अलख जगाई। ऐसे युग पुरुष कभी–कभी जन्म लेते हैं जो समस्त राष्ट्र जीवन को बडे ही क्रान्तिकारी ढंग से परिवर्तित कर देते हैं और जिनके अवतरण से समाज में नए मूल्यों एवं आदर्शों की प्रतिष्ठा होती है। असहाय के लिए वे पिता समान बापू तथा समाज में आदर्श मूल्यों के मार्गदर्शक रूप में महात्मा थे। गांधीजी ने देश को विश्वगुरु तथा बन्धुत्व की पताका लहराने के लिए कार्य किया।

राम, कृष्ण, स्वामी विवेकानन्द की भूमि पर महात्मा गांधी के रूप में शताब्दी के वैश्विक नायक का पदार्पण हुआ। वे शंकराचार्य के पदचिह्नों पर चलकर देश को संगठित करने हेतु प्रयासरत रहे। शंकराचार्य जी ने देश के चारों कोनों में अकर्मण्यता

व वैचारिक वैमनस्यता के निवारण हेतु यात्रा की व चार मठ स्थापित किए। उसी प्रकार गांधी जी ने जन-जन तक अपने विचार पहुंचाने, उनकी समस्या सुनने तथा देश को एकजुट करने हेतु अहमदाबाद में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की तथा कोलकाता, वाराणसी, हरिद्वार भ्रमण के साथ अंत में मद्रास (चेन्नई) की यात्रा की। इस यात्रा काल में गांधी जी ने लोगों के विचारों, उनकी समस्याओं, देश की वस्तुस्थिति को समझा-परखा व निष्कर्ष निकाला कि देश की समृद्धि तभी संभव है जब सभी लोग संगठित रहें।

गांधीजी समाज को स्वावलंबी बनाने तथा सत्य, अहिंसा, प्रेम, कर्म की महत्ता पर समाज को प्रेरित करते रहे। स्त्रीशिक्षा तथा समाज के अंतिम व्यक्ति हेतु वे हमेशा चिंतित रहे। वे सत्य तथा अहिंसा को समाज में प्रतिष्ठित करना चाहते थे जिससे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में न्याय की स्थापना हो। अहिंसा से उनका अभिप्राय विरोधी को कष्ट देकर नहीं अपितु स्वयं अपने आप को कष्ट देकर सत्य का समर्थन करना है। वस्तुतः अहिंसा प्रत्येक प्राणी के विरुद्ध द्वेष का अभाव है, यह प्रगतिशील दशा है इसका अर्थ चेतन रूप से कष्ट भोगना है। अहिंसा अपने सक्रिय रूप में जीवन के प्रति सद्भावना है। यह शुद्ध प्रेम है। उनका कहना था कि स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार, अहिंसक जीवन, सत्य का प्रयोग, आपसी बन्धुत्व के पोषक द्वारा ही देश श्रेष्ठ स्तर को प्राप्त होगा। शिक्षा में उन्होंने बुनियादी शिक्षा को तब भी जोर देकर अपनाने हेतु प्रेरित किया। वर्तमान भारतीय नेतृत्व भी बुनियादी शिक्षा हेतु आवाज उठा रहा है जो रोजगार साधन हेतु उचित प्रयास है।

गांधीजी ने भारत आकर अत्यंत सरल जीवन व्यतीत किया वे कहते थे कि जब तक देश के प्रत्येक व्यक्ति के शरीर पर पूरे कपडे न हों मैं कैसे अधिक वस्त्र धारण कर सकता हूँ। फलतः उन्होंने अपना जीवन दर्शन सीमित संसाधनों को समर्पित किया और खादी वस्त्र पहनें तथा स्वयं खादी कातने लगे। स्वरोजगार की भावना तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के लिए वे जागृत करते रहे। उनका कहना था खादी ने गरीबों के लाभ के लिए कुछ करके दिखा दिया, अब हमें यह दिखाना होगा कि गरीब स्वावलंबी कैसे बन सकते हैं? खादी अहिंसा का प्रतीक कैसे बन सकती है? यही हमारा असली काम है। इसमें हमें अपनी श्रद्धा का प्रत्यक्ष प्रमाण देना होगा। वस्तुतः स्वावलंबन के लिए इस प्रकार के लघु उद्योग तथा उनकी अनिवार्य प्रयुक्तता आवश्यक है।

समाज के अंतिम जन जिसे मूलभूत आवश्यकताओं हेतु अभावग्रस्त जीवन जीना पडता है उसके लिए गांधीजी प्रयासरत रहे। जातिप्रथा को उन्होंने नासूर के समान माना। उनका कहना था कि पूर्ववर्ती भारतीय साहित्य ने तो कर्म के वितरणानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र का निर्धारण किया लेकिन जन्म से ही किसी व्यक्ति की जाति का निर्धारण करना अनुचित है। अतः उन्होंने उन अंतिमजन, पिछडेजन को आवाज देने हेतु हरिजन का प्रचार किया। समाज की अनेकानेक अनुचित प्रथाओं के वे विरोधी रहे। मैला उठानेवाली प्रथा का उन्होंने सिरे से विरोध किया वे कहते थे कि जब शौचादि क्रिया स्वयं करते हैं तो उसे साफ भी स्वयं करना चाहिए। गांधीजी श्रेष्ठ विचारों को अपने जीवन में उतारकर समाज हेतु अनुमोदन करते थे। उनके ये सद्विचार ही उन्हें मूल्यों का श्रेष्ठवेत्ता साबित करते है।

गांधीजी ने शिक्षा, भाषा, स्वदेशी आत्मनिर्भरता, सर्वोदय समाज पर अनेकानेक श्रेष्ठ विचार दिए जिन्हें जीवनमूल्यों के रूप में हम अपने जीवन में उतरते हैं। यद्यपि इनमें से अनेकानेक स्तर पर सुधार की आवश्यकता है। समय के महत्व को उन्होंने आवश्यक माना और उन्हें पता था कि जहाँ तक वे नहीं पहुँच पा रहे हैं वहां उनके शब्द उनकी आवाज बनेंगे। इसलिए वे लेखन कार्य में

संलग्न रहते थे। समय का सदुपयोग वे लेखन द्वारा करते थे। यात्रा के दौरान उन्होंने हिंद स्वराज पुस्तक लिखी तथा यंग इंडिया नामक पुस्तक उन्होंने सलाखों के पीछे लिखी। विलक्षणता की अतिशयता इतनी थी कि वे दोनों हाथों से लिखते थे ताकि एक हाथ के थकने पर समय बर्बाद न हो। इस प्रकार के विरले महापुरुष हमारे देश की समृद्धता के मूल स्तंभ है। उनके श्रेष्ठ विचारों की परिणति हमारे देश के साथ-साथ विश्व समुदाय को श्रेष्ठ दर्शन से परिचित करवाता है। संभवतः स्वामी विवेकानंद तथा महात्मा गांधी ही ऐसे लोकनायक हुए हैं जो न केवल देश में अपितु विश्व में भारतीय संस्कृति, परंपरा, सहृदयता, बन्धुत्व का डंका बजाकर श्रेष्ठ पथ प्रदर्शन द्वारा लोगों को प्रभावित करने में समर्थ रहे हैं।

गांधीजी का मानना था कि देश में स्वतंत्रता तभी प्राप्त हो सकती है जब हिंदुस्तान में विचारों का आदान प्रदान उनकी अपनी भाषा में हो सकें। इसके लिए एक भाषा की अवधारणा स्पष्ट थी। उनका कहना था कि मुझे अपनी मातृभाषा से उसी प्रकार चिपटे रहना चाहिए जिस तरह मैं अपनी माता के स्तनों से चिपटा रहता हूँ चाहे उसमें कितने ही दोष हैं, वही मुझे जीवनदायक दुग्ध प्रदान कर सकती है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो भारत में अधिकांश लोगों द्वारा लिखी, बोली तथा समझी जाती है। अनेकानेक क्षेत्रीय बोलियों के समन्वय से समाज का हर तबका इसका प्रयोग करने में समर्थ है। हिंदी भाषा को वे जन-जन की भाषा मानते थे। वे लोकभाषा तथा हिंदी भाषा के हिमायती थे क्योंकि उन्हें पता था कि देश की एकभाषा होने से ही समाज और राष्ट्र संगठन को प्राप्त होगा। एकजुटता, भाईचारा तथा अनेकता में एकता की भावना भी तभी साकार होगी।

गांधीजी अंतिमजन के हित की बात करते थे और इसी वर्ग से उन्हें ज्यादा उम्मीद भी थी। उनकी यात्राओं का उद्देश्य भी यही था कि वे आमजन को जान सकें। आमजन की मनःस्थिति तथा तत्कालीन परिस्थिति को जानने का एकमात्र यही उपाय था। अभाव की तकलीफ पर उनके विचार स्पष्ट थे मेरी राय में न सिर्फ भारत की, बल्कि सारी दुनिया की अर्थ–रचना ऐसी होनी चाहिए जिससे किसी को भी अन्न और वस्त्र के अभाव की तकलीफ न सहनी पडे। दूसरे शब्दों में हर एक को इतना काम मिल जाना चाहिए कि वह अपने खाने-पहनने की जरूरतें पूरी कर सके। यह आदर्श निरपवाद रूप से तभी कार्यान्वित किया जा सकता है जब जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं के उत्पादन के साधन जनता के नियंत्रण में रहें।

गांधीजी ने एक विशाल वैचारिक दृष्टि को अपनी यात्राओं के माध्यम से प्रस्तुत किया। अपनी वेशभूषा, अपनी भाषा तथा सरल स्वभाव के कारण वे जन-जन के बापू हो गये। दक्षिण अफ्रिका में अपना जादू बिखेरकर वे अपने देश के लिए वरदान साबित हुए। वे ऊंच-नीच का भेद, जातिगत वैमनस्य तथा हिंदु मुस्लिम अविश्वास मिटाने हेतु सदैव प्रयासरत रहे। वे देश की समृद्धि गांवों से मानते थे और किसानों के लिए वे सदैव चिंतनशील रहे। गांधी का दर्शन जीवन के सर्वांगीण विकास से अनुप्राणित था। उनके चिंतन के अन्य स्तंभों की भांति अर्थ संबंधी विचार भी अहिंसा, सत्य, नैतिकता से ओतप्रोत थे। गांधी के सुझाव, वास्तविकता और सामयिक अनुभवों पर आधारित हैं। उनके विचार समय की चुनौतियों, वैयक्तिक व्यवस्थात्मक आवश्यकताओं और मानवता की प्राथमिकताओं से प्रेरित रहे। उनका मानना था कि भारत गांवों में ही बसता है। अस्तु वर्तमान में देश की राजनीति, शिक्षा तथा सामाजिकता पर उनके विचारों की स्पष्ट छाप है, और हमेशा रहेगी।

वर्तमान भारतीय संदर्भ तथा अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में गांधीजी के विचारों तथा उन्हें ग्रहण करने की अत्यंत आवश्यकता है। वस्तुतः वर्तमान में जो उदारीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण के संदर्भ में

शोषण तथा विषमता का साम्राज्य फैल रहा है उस पर गांधीजी के विचारों से ही पार पाया जा सकता है। अतः समता के साथ स्वतंत्रता, विज्ञान के साथ अध्यात्म, व्यष्टि के साथ समष्टि हित तथा सर्वजन समभाव की भावना सामाजिक हित के लिए अपरिहार्य है। आतंकवाद, सैक्युलरिज्म, अफसरशाही, भ्रष्टाचार, स्वच्छता, संत्रास, घरवापसी आदि ऐसे मुद्दे हैं जिन पर गांधीवादी दर्शन से विचार करें तो प्रत्येक समस्या का समाजोपयोगी समाधान प्राप्त हो जाएगा। आवश्यकता है सहृदयता से उसे ग्रहण करने की। देश में स्वच्छता, मैला प्रथा आदि के समन हेतु सरकार तथा समाजसेवी संस्थाओं द्वारा सकारात्मक पहल ने न केवल उन विचारों को आगे बढाया है अपितु छात्र, युवा, महिलाओं तथा समाज के हर वर्ग को भी प्रेरित किया है। वर्तमान वर्ष युवा वर्ग में एक सकारात्मक पहल के साथ प्रारंभ हो रहा है। प्रत्येक नवयुवक एक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अपने देश के लिए, समाज के लिए प्रेरित होकर कुछ करना चाहता है। इसके लिए आवश्यकता है एक मार्ग की जो उन्हें इस प्रकार सकारात्मक तरीके से प्रेरित करता रहे और वह मार्ग है गांधी जी के विचारों का मार्ग।

संदर्भ–सूची

1. साभार अमर उजाला, देहरादून संस्करण, 8 जनवरी 2015, पृ.14
2. समाज एवं संस्कृति, दशरथजैन, पृ.147
3. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, डॉ के पी पांडेय, पृ.311
4. वही, पृ.310
5. खादी क्यों और कैसे, गांधी (1957), पृ.197
6. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, डॉ.के पी पांडेय, पृ.317
7. गांधीजी का सामाजिक चिंतन, डॉ एम के मिश्रा, डॉ कमल दाधीच, प्रथम संस्करण 2011, भूमिका।
8. वही, पृ.242

पथ मेरा निर्वाण बन गया

पथ मेरा निर्वाण बन गया!
प्रति पग शत वरदान बन गया!

आज थके चरणों ने सूने तम में विद्युत्-लोक बसाया,
बरसाती है रेणु चाँदनी की यह मेरी धूमिल छाया,
प्रलय-मेघ भी गले मोतियों
का हिम-तरल उफान बन गया!

अंजन-वदना चकित दिशाओं ने चित्रित अवगुंठन डाले,
रजनी ने मरकत-वीणा पर हंस किरणों के तार सँभाले,
मेरे स्पंदन से झंझा का
हर-हर लय-संधान बन गया!

पारद-सी गल हुई शिलाएँ दुर्गम नभ चंदन-आंगन-सा,
अंगराग घनसार बनी रज, आतप सौरभ-आलेपन-सा
शूलों का विष मृदु कलियों के
नव मधुपर्क समान बन गया!

मिट-मिटकर हर साँस लिख रही शत शत मिलन-विरह का लेखा,
निज को खोकर निमिष आँकते अनदेखे चरणों की रेखा,
पल भर का वह स्वप्न तुम्हारी
युग युग की पहचान बन गया!

देते हो तुम फेर हास मेरा निज करुणा-जलकणमय कर,
लौटाते हो अश्रु मुझे तुम अपनी स्मित के रंगों भर,
आज मरण का दूत तुम्हें छू
मेरा पाहुन प्राण बन गया!

- साभार-महादेवी के श्रेष्ठगीत से

राजभाषा कार्यान्वयन की समस्यायें

पार्वती एन

राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन एक दायित्वपूर्ण एवं महत्वपूर्ण कार्य है, किंतु राजभाषा संबंधी नियमों को सौ फीसदी लागू करना उतना आसान काम नहीं है क्योंकि भारत भाषाई विविधता का एक महान देश है। उतनी भाषाओं के होते हुए भी हिंदी को इसलिए राजभाषा एवं संपर्क भाषा मानी गयी है कि भारत के अधिकतर लोगों से वह बोली और समझी जाती है साथ-ही-साथ भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण परिच्छेद उसमें निहित है। अतः राजभाषा के रूप में हिंदी के कार्यान्वयन में समस्याओं के आ खडी होना स्वाभाविक ही है। ये समस्यायें सरकार की राजभाषा संबंधी नियमों के कारण हो सकती हैं, स्वयं हिंदी भाषा की विशेषताओं एवं कमियों की उपज हो सकती है, साथ-ही-साथ कार्यान्वयन के भार उठानेवाले कर्मचारियों की भाषागत अज्ञता के परिणाम स्वरूप भी हो सकती हैं। आगे इन्हीं समस्याओं पर विस्तृत रूप से विचार किया जाता है।

2.1. भाषागत समस्यायें

इसके अंतर्गत लक्ष्यभाषा के शब्द-भंडार की कमी, भाषा की वैयाकरणिक एवं संरचनात्मक क्लिष्टता संबंधी समस्याओं की चर्चा है। राजभाषा हिंदी के संदर्भ में मुख्यतया दो प्रकार की समस्यायें हैं।

2.1.1. पारिभाषिक शब्दावली संबंधी समस्यायें

खडीबोली हिंदी के स्वरूप के सुप्रतिष्ठित और सुव्यवस्थित हो जाने के बाद उसमें पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न आ उपस्थित हुआ। इस प्रश्न का उपस्थित होना भी बिलकुल स्वाभाविक था; क्योंकि जो हिंदी स्वतंत्र भारत की संपर्क भाषा बनी उसमें विज्ञान एवं प्राविधिक के नित्य नये शब्दों के हिंदी रूपांतर की आवश्यकता हुई। एक ओर भारत का स्वतंत्र होकर उसके द्वारा हिंदी को राजभाषा स्वीकार करना और दूसरी ओर भारत का शेष विश्व के साथ संपर्क, जहाँ विज्ञान और प्राविधिक ज्ञान के रोज नये-नये आविष्कार और अनुसंधान हो रहे थे और जिनसे स्वतंत्र भारत अपने को पृथक भी नहीं रख सकता था। ये दो ऐसे कारण थे जिनमें से राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिंदी में सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या पारिभाषिक शब्दों के निर्माण की समस्या उपस्थित हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रायः आजतक संपूर्ण देश में पारिभाषिक शब्दावली और प्रशासकीय शब्दरूपों को लेकर संदेह, अविश्वास और भ्रम का वातावरण फैला हुआ ही है जिसका निराकरण अब नितांत आवश्यक हो गया है क्योंकि हमारी स्वतंत्रता अब वार्द्धक्य को छू चुकी है। देश में फैले पारिभाषिक एवं प्रशासकीय शब्दावली के संबंध में संदेह और भ्रम के कुछ एक कारणों में सरकारी नीति की अस्पष्टता, शब्दावली निर्माण के लिए किसी केंद्रीय परिषद् या अभिकरण की अनुपस्थिति, निष्पक्षता की कमी, देश में प्रबुद्ध वर्गों की तत्संबंधी उदासीनता और भौतिकता की प्रधानता के साथ-ही-साथ भावात्मक एकता की दृष्टि की कमी मानी जा सकती है। इन्हीं कारणों से हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली स्थिर नहीं हो पायी है। इनके प्रयोग में निश्चयात्मकता नहीं आती है।

सरकारी नीति पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की दिशा में स्पष्ट नहीं देखी जाती है। संविधान के प्रावधान के अनुसार कभी तो पारिभाषिक शब्दावली भारतीय भाषाओं को विशेषतः संस्कृत को आधार मानकर अपनाई जाती है, तो कभी अंग्रेजी के शब्द ज्यों के त्यों रख लिए जाते है जैसे प्राइमिनिस्टर के लिए प्रधानमंत्री के साथ अंग्रेजी के प्राइमिनिस्टर को ही रखते हैं। कभी-कभी पारिभाषिक शब्दावली के स्थिर नहीं होने में विभिन्न राज्यों एवं तत् भाषाओं में शब्दावली का निर्माण होना भी एक कारण बन जाता है। संपर्क भाषा की अपनी एक विशेष महत्ता है। अतः उसके सार्वदेशिक प्रयोजनों में आनेवाले शास्त्रीय, प्रशासकीय, प्राविधि की वैज्ञानिक आदि शब्दावलियों का निर्माण एक केंद्रीय अभिकरण द्वारा या देश के चुने हुए भाषाविदों की एक

परिषद द्वारा होना चाहिए। इस कार्य में शब्दावली में एकरूपता रहेगी। बंगला भाषा में प्लैनिंग के लिए परिकल्पना शब्द प्रयुक्त होता है किंतु हिंदी में आयोजना। इस प्रकार ऐसे कितने महत्वपूर्ण और संपूर्ण देश के लिए समान रूप से लाभोपयोगी शब्द हैं जिनके स्परूप में एकरूपता का अभाव है।

कार्यालयी साहित्य में अभिधा का ही प्रयोग होता है, लक्षणा तथा व्यंजना का नहीं। विज्ञापन की हिंदी में भी अभिधा का प्रयोग ही मिलता है जैसे - ..... रु की खरीद पर मुफ्त उपहार लेना मत भूलिए। कार्यालयी हिंदी - श्री ..... की छुट्टी अस्वीकार की जाती है यात्रा के लिए रु ..... की अग्रिम राशि की मंजूरी दी जाती है। इसी प्रकार एकार्थता कार्यालयी हिंदी की मुख्य विशेषता हे। एक तीसरी बात कार्यालयी भाषा की यह है कि कार्यालयी भाषा के पारिभाषिक शब्द काफी कुछ अलग होता है, जिनका प्रयोग अन्य प्रयुक्तियों में नहीं होता जैसे निविदा (टेंडर), शपथ पत्र आदि। हिंदी साहित्य लिखने में सामान्यतः शब्द रचना में समस्रोतीयता का ध्यान रखा जाता है; लेकिन कार्यालय भाषा में समस्रोतीयता का बंधन नहीं रहता। इसमें तत्सम शब्दों के साथ उर्दू या अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है- जैसे मसौदा अनुमोदन के लिए पेश है, कृपया बिल से संबंधित फाइल दें, इन वाक्यों में मसौदा उर्दू का शब्द है अनुमोदन संस्कृत का तथा फाइल अंग्रेजी का लेकिन कार्यालय की भाषा में इन शब्दों का प्रयोग होता है।

कार्यालय हिंदी के कुछ अपने अलग संक्षेप है, जिनका अंग्रेजी में प्रयोग होता रहा है - जैसे C.L., D.O., E.L., LDC हिंदी में इनका संक्षेप लिखित रूप में कभी-कभी होता है, लेकिन चर्चा में नहीं मिलता। कार्यालयी हिंदी में अनुवाद किए जाने पर अंग्रेजी के वाक्यों की छाया बहुत कुछ रह जाती है। इससे हिंदी के वाक्य अटपटे लगने लगते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के please का अनुवाद कृपया हिंदी के वाक्यों में आदर सूचक शब्द के रूप में इसकी उतनी आवश्यकता नहीं रह जाती।

यदि भारतीय भाषाओं को विकसित होने का अवसर मिला रहता तो पारिभाषिक शब्दावली की समस्या खडी नहीं होती। सदियों की राजनीतिक पराधीनता एवं वैदेशिक शासन के कारण हिंदी ही क्या, किसी भी भारतीय भाषा को शिक्षा, न्याय, शासन, विधान तथा अन्यान्य राष्ट्रीय क्रिया कलाप का साधन या माध्यम बनने का सुयोग नहीं मिला। नतीजा यह हुआ कि अन्य भारतीय भाषाओं के साथ हिंदी भी इस दिशा में पिछडी रही। संपूर्ण विश्व में उन्नीसवीं शताब्दी तथा बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में जो महान वैज्ञानिक एवं प्राविधिक क्रांति हुई वह भारत में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से आयी। यदि विज्ञान और प्राविधिक की इस नवीन ज्ञान राशि को देश की सर्वसम्मत राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से जनता में उतारा जाता तो हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली की ऐसी अवस्था नहीं होती। विज्ञान की प्रगति से देश आगे बढ गया और देश की भाषा पीछे छूट गई। ज्ञान और भाषा के बीच की इस खाई को पाटने का गुरुतर कार्य हिंदी के ऊपर आ पडा है।

2.1.2 भाषा की क्लिष्टता संबंधी समस्यायें

भाषा संबंधी कठिनाई भी एक प्रमुख समस्या है। जहाँ तक सरकारी व्यवस्था का संबंध है, कामकाजी अनुवाद में स्रोतभाषा अंग्रेज़ी के सुस्थिर प्रसार एवं प्रचार के बावजूद भी कई कर्मचारी को अंग्रेज़ी ठीक से आती नहीं और उसको ठीक से समझते नहीं, विशेषकर संस्थागत या कार्यक्षेत्र गत अनुवाद करते समय उस अमुक कार्यक्षेत्रीय पारिभाषिक शब्दावली का समतुल्य शब्द ढूँढना कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए मान्य शब्दावलियों में सही समतुल्य शब्द नहीं मिलता। इसका अर्थ केवल चल कर्मचारी दिया गया है जबकि नाँवहन कार्यक्षेत्र में जहाजी कर्मचारियों से इसका अर्थ संबद्ध है।

2.2. प्रशिक्षण की समस्यायें

जैसे सब जानते है, भारत एक विशाल देश है जहाँ कई भाषाएँ बोली जाती है, इसमें कुछ ऐसी है जिसे हिंदी भाषा से काफी साम्य होता है। लेकिन अधिकतर भाषाएँ ऐसी ही होती है जिसका हिंदी से

व्याकरणिक या संरचनात्मक कोई साम्य नहीं होता। ऐसे भाषा-भाषी प्रान्तों के कर्मचारियों में हिंदी भाषा की जानकारी की प्रतीक्षा करना अनुचित ही होगा। ऐसी अवस्था में हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रयुक्त किए जाने के लिए इन कर्मचारियों को आवश्यक प्रशिक्षण देकर तैयार करना बेहद ज़रूरी है। इसी प्रकार केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा का काम करनेवाली अंग्रेज़ी भाषा का ठीक प्रशिक्षण भी आवश्यक होता है। इन्हीं प्रशिक्षणों के अभाव या कमी भी हिंदी को पूर्णतः राजभाषा बनाने में बाधा उपस्थित कर डालते हैं। आगे प्रशिक्षण संबंधी इन्हीं समस्याओं पर विचार करेंगे।

हिंदी को राजभाषा बनाने की सरकारी नीति के अनुकूल भारत सरकार ने गृह मंत्रालय के अधीन एक राजभाषा विभाग की स्थापना की। राजभाषा विभाग के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी निदेशालय आता है जो केंद्र सरकार के कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने की बहुत कुछ योजनाएँ आयोजित करता है। साथ-ही-साथ गृह मंत्रालय के ही अधीन हिंदी शिक्षण योजना नामक एक संस्था भी है जो देश के विभिन्न केंद्रों में कक्षायें चलाकर प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से केंद्र सरकार के कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कार्य निभाने में सक्षम बनाने की कोशिश करते हैं।

इन सभी कार्यक्रमों के बावजूद भी भारत के सरकारी कर्मचारी शासकीय कार्य हिंदी में करने के लिए पूर्णतया सक्षम नहीं हो पाते। प्राप्त प्रशिक्षण की अपर्याप्तता ही इसका एक कारण है। सरकार की प्रशिक्षण योजनाओं में कई प्रकार की अपर्याप्तताएं हैं।

2.2.1 पाठ्यक्रम की अपर्याप्तता

सरकारी नियमों के अनुसार स्कूल के दसवें कक्षे तक हिंदी पढे हुए कर्मचारी को प्रबोध एवं प्रवीण को छोडकर प्राज्ञ पाठ्यक्रम की ही आवश्यकता है। नीति एवं नियम निर्माताओं का यही विचार होता है कि दसवें तक हिंदी पढे कर्मचारी हिंदी भाषा के सामान्य ज्ञान का अधिकारी होते हैं। हिंदी भाषी प्रदेशों के कर्मचारियों के लिए यह सही भी है। लेकिन हिंदीतर भाषी प्रान्तों के कर्मचारी रखते। ऐसे कर्मचारियों को प्रबोध या प्रवीण पढाए बिना सीधे प्राज्ञ पाठ्यक्रम के लिए भेजे जाएँगे तो वे लोग सरकारी पत्राचार के ढाँचे से तो परिचित हो जाते हैं मगर भाषा स्वाभाविक नहीं होने के कारण विषय को प्रस्तुत करने में असमर्थ हो जाते हैं। वस्तुतः कर्मचारी को राजभाषा में सुसज्जित करने के लिए जो पाठ्यक्रम चलाया जाता है वह वास्तव में उन्हें उपयोगी सिद्ध नहीं होते। राजभाषा के रूप में हिंदी के कार्यान्वयन की यह एक बहुत बडी समस्या है।

सीखें और प्रयोग करें

- An amount of Rs. 250/- has been paid for the above items. The amount may kindly be reimbursed to me.
  उक्त चीज़ों के लिए 250/- रुपए का भुगतान किया है। कृपया रकम की प्रतिपूर्ति की जाए।

- Certified that Smt. Chandrika has done the upkeep works of FO Station Manarcaud satisfactorly for the months of June and July 2018. Hence an amount of Rs.1500/- may be sent to her.
  प्रमाणित किया जााता है कि श्रीमती चंद्रिका ने जून और जुलाई 2012 के महीने के दौरान प्रादेशिक स्टेशन भरणंगानम के रखरखाव कार्य संतोषजनक रूप से किया है। अतः 1500 रुपए की रकम उनको भेज दें।

हिंदी दिवस समारोह

प्रादेशिक कार्यालय कांजिरप्पल्ली में 24 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री सिरियक मात्यु, हिंदी अध्यापक, सेंट मेरीस हाई स्कूल, वेल्लारंकुन्नु प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री डी श्रीकुमार, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह का उत्घाटन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त श्री डी श्रीकुमार ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - लिल्लिकुट्टी पी सी, सहायक सचीव

द्वितीय - जास्मिन तोमसण, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - मरियाम्मा वी के, सहायक

II. भाषण

प्रथम - लिल्लिकुट्टी पी सी, सहायक सचीव

द्वितीय - जास्मिन तोमसण, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - संतोष वी जी, सहायक विकास अधिकारी

III. कवितापाठ

प्रथम - जास्मिन तोमसण, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - के आर प्रसन्नकुमारी, सहायक

तृतीय - पी अशोक, स. वि. अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय तृश्शूर में 24 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस मनाया गया। श्री मनोज पी वी, मुख्य अनुदेशक, हिंदी अध्यापकों का प्रशिक्षण संस्थान, तृश्शूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त और निर्णायक ने पुरस्कारों का वितरण किया। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - वी के इंदिरा वारस्यार, क.सहायक ग्रेड I

द्वितीय- कातेरिन सी के, सहायक

तृतीय - के ए विन्सेंट, स. विकास अधिकारी

II. भाषण

प्रथम - वी के इंदिरा वारस्यार, क.सहा. ग्रेड I

द्वितीय - रंजीत सी, आर टी डी

तृतीय - सी वी मुरली, अभिलेखपाल

III. कवितापाठ

प्रथम - मेरियम्मा पी तोमस, स.वि.अधिकारी

द्वितीय - रघु पी ए, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - वी के इंदिरा वारस्यार, क.सहा. ग्रेड I

प्रादेशिक कार्यालय पाला में 24 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। डॉ. सी के जेइम्स, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, सेंट तोमस कॉलेज, पाला प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री जोसफ, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। इस सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित

कीं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। निर्णायक ने पुरस्कारों का वितरण किया। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - डेयसी कुर्यन, सहायक

द्वितीय - जोसफ पी एस, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

तृतीय - माया एल, सहायक

II. निबंध लेखन

प्रथम - डेयसी कुर्यन, सहायक

द्वितीय - सिनी जे, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

तृतीय - माया एल, सहायक

II. भाषण

प्रथम - जोसफ पी एस, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

द्वितीय - पी पी पोल, विकास अधिकारी

तृतीय - माया एल, सहायक

प्रादेशिक कार्यालय ईराट्टुपेट्टा में 24 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मंजु एम, अध्यापिका, एम जी एच एस एस, ईराट्टुपेट्टा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री आन्टणी जोण, विकास अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। श्री आन्टणी जोण, विकास अधिकारी ने पुरस्कारों का वितरण किया। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. भाषण

श्री/श्रीमती

प्रथम - सुनिल कुमार पी आर, सहायक

द्वितीय - के. शांतम्मा तोमस, अनु. अधिकारी

तृतीय - निसरी त्यागराज, क.सहायक ग्रेड I

II. कवितापाठ

प्रथम - के. शांतम्मा तोमस, अनु. अधिकारी

द्वितीय - अभिलाष वी के, कनिष्ठ सहायक

तृतीय - निसरी त्यागराज, क.सहायक ग्रेड I

प्रादेशिक कार्यालय तोडुपुषा में 9 नवंबर 2018 को हिंदी दिवस मनाया गया। श्री पी टी तोमस, हिंदी अध्यापक (सेवानिवृत्त) प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री पी एम सोमशेखरन, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह का उद्घाटन किया। श्रीमती रती देवी सी जी, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I ने आशंसा भाषण किया। इस सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। श्री शिवरामन पी आर, सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। श्री पी एम सोमशेखरन, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - टोणी मैकिल, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - सतीना सी बी, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

तृतीय - रती देवी सी जी, क. सहायक ग्रेड I

II. निबंध लेखन

प्रथम - शिवरामन पी आर, स.विकास अधिकारी

द्वितीय - रती देवी सी जी, क. सहायक ग्रेड I

तृतीय - सतीना सी बी, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

III. भाषण

प्रथम - पोल तोमस, क.प्रक्षेत्र अधिकारी

द्वितीय - परीतुकुंजु एन ए, विकास अधिकारी

तृतीय - मोहनलाल पी पी, विकास अधिकारी

IV. कवितापाठ

प्रथम - सतीना सी बी, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I

द्वितीय - के टी मात्यु, रबड़ टापिंग निदर्शक

तृतीय - शिवरामन पी आर, स.विकास अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय, मण्णार्क्काड में 25 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री विजयन के, हिंदी अध्यापक, के टी एम हायर, मण्णार्क्काड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री पी गोकुलन, विकास अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। इस सिलसिले में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं

आयोजित कीं। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। प्रतियोगिताओं में विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - डॉ प्रिया पी बी, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - सुभाष के सी, सहायक

तृतीय - विनोदकुमार वी, क. सहायक ग्रेड I

II. भाषण

प्रथम - विनोदकुमार वी, क. सहायक ग्रेड I

द्वितीय - सुभाष के सी, सहायक

तृतीय - डॉ प्रिया पी बी, क्षेत्रीय अधिकारी

III. कवितापाठ

प्रथम - डॉ प्रिया पी बी, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - पी अनिता, सहायक

तृतीय - सुभाष के सी, सहायक

प्रादेशिक कार्यालय, पालक्काड में 28 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री एन सोमसुंदरन, हिंदी अध्यापक (सेवानिवृत्त), जी एच एस एस बिग बाज़ार, पालक्काड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री के.आर.शिवमणी, विकास अधिकारी ने बैठक की अध्यक्षता की। श्रीमती वी पी प्रेमलता, विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण किया। श्री कृष्णप्रसाद, सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - पार्वती एम पी, सहायक

द्वितीय - जयरामन सी एन, सहायक
तृतीय - बीना बी, अनुभाग अधिकारी

II. भाषण

प्रथम - कुरुविला चेरियान, स.विकास अधिकारी
द्वितीय - बीना बी, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - जयरामन सी एन, सहायक

III. कवितापाठ

प्रथम - जयरामन सी एन, सहायक
द्वितीय - गोपालकृष्णन के, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - बीना बी, अनुभाग अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय निलंबूर में 25 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। डॉ पी वी श्रीजा, सहायक प्रोफेसर, मंपाड कॉलेज, निलंबूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - षीजा ए एन, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I
द्वितीय - प्रीता के, सहायक
तृतीय - अनु जोर्ज, क्षेत्रीय अधिकारी

II. भाषण

प्रथम - षीजा ए एन, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I
द्वितीय - अनिता एस, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - प्रीता के, सहायक

III. कवितापाठ

प्रथम - मुबषीरा बक्कर, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I
द्वितीय - मिनिमोल एम एस, स.विकास अधिकारी
तृतीय - अनु जोर्ज, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय कोषिक्कोड में 27 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री उमेश, हिंदी अधिकारी, पुलिस विभाग प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती रक्षित ए एस, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री सी एन राजीव, विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण किया और श्री रामचंद्रन, विकास अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित की। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - रंजनाकुमारी वी एम, अनुभाग अधिकारी
द्वितीय - जयश्री कुट्टाडन, सहायक
तृतीय - सुलैमान टी पी, कनिष्ठ सहायक

II. भाषण

प्रथम - जमाल के के, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - रंजनाकुमारी वी एम, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - सुलैमान टी पी, कनिष्ठ सहायक

III. कवितापाठ

प्रथम - जयश्री कुट्टाडन, सहायक
द्वितीय - रंजनाकुमारी वी एम, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - जमाल के के, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय तलिपरंबा में 24 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती सपना के, हिंदी अध्यापिका, मूत्तेडत्त हायर सेकेंडरी

स्कूल, तलिपरंबा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री सुमेधन के एन, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - अभिलाष टी, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I
द्वितीय - राजु के टी, सहायक विकास अधिकारी
तृतीय - ओमना के के, सहायक

II. भाषण

प्रथम - पी के रघुनाथ, विकास अधिकारी
द्वितीय - अभिलाष टी, कनिष्ठ सहायक ग्रेड I
तृतीय - राजु के टी, सहायक विकास अधिकारी

III. कवितापाठ

प्रथम - मधुसूदनन के एम, अनुभाग अधिकारी
द्वितीय - विनोद के एम, रबड़ टापिंग निदर्शक
तृतीय - पी के रघुनाथ, विकास अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय कांजंगाड में 28 सितंबर 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री विजयन सी के, हिंदी अध्यापक (सेवानिवृत्त), अंबलत्तरा हाई स्कूल, कासरगोड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती कुंजम्मा ए, विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण किया। श्री श्रीकांत ए पी, सहायक विकास अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित की। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - वत्साराजन टी के, क.सहायक ग्रेड I
द्वितीय - सुमती के बी, क.सहायक ग्रेड I
तृतीय - श्रीकांत ए पी, स.विकास अधिकारी

II. भाषण

प्रथम - श्रीकांत ए पी, स.विकास अधिकारी
द्वितीय - वत्साराजन टी के, क.सहायक ग्रेड I
तृतीय - षीला वी, क्षेत्रीय अधिकारी

III. कवितापाठ

प्रथम - षीला वी, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - वत्साराजन टी के, क.सहायक ग्रेड I
तृतीय - श्रीकांत ए पी, स.विकास अधिकारी

सर्वोत्तम व्यक्ति वे नहीं है जिन्होंने अवसरों का इंतज़ार किया बल्कि वे हैं जिन्होंने अवसरों को अपनाया, जीता और सफल बनाया। - **डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम**

चिकित्सा : शरीर विज्ञान नोबेल पुरस्कार

सर बर्नार्ड काज़

पुरस्कार वर्ष : 1970
जन्म : 26 मार्च, 1911
मृत्यु : 20 अप्रैल, 2003
राष्ट्रीयता : दर्मन/ब्रिटिश

इनकी खोज का मुख्य विषय तंत्रिकाओं और मांसपेशियों का क्रियाकलाप था-अर्थात् यह कि तंत्रिका कोशिका से आवेग मांसपेशी की कोशिका तक कैसे पहुंचता है। इनके साथ दो अन्य वैज्ञानिकों को भी इसी विषय से संबंधित खोज के कारण सम्मानित किया गया था।

उल्फ वान उलेर

पुरस्कार वर्ष : 1970
जन्म : 7 फरवरी, 1905
मृत्यु : 12 मार्च, 1983
राष्ट्रीयता : स्वीडिश

जूलिअस एक्सलरॉड तथा सर बर्नार्ड काज के साथ 1970 का नोबेल पुरस्कार इन्हें भी भागीदार के रूप में दिया गया। इनकी खोज का मुख्य विषय तंत्रिकाओं द्वारा आवेगों का संप्रेषण था। अन्य दोनों वैज्ञानिकों के विषय भी इससे मिलते-जुलते थे।

अर्ल विलबुर सदरलैण्ड जूनि.

पुरस्कार वर्ष : 1971
जन्म : 19 नवंबर, 1915
मृत्यु : 9 मार्च, 1974
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्होंने शरीर में हार्मोन्स की क्या क्रिया और कार्य होता है, विषय पर गहन अध्ययन किया और इसीलिए इन्हें 1871 के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। छप्पन वर्ष की आयु में पुरस्कार प्राप्त हुआ और अट्ठावन वर्ष की आयु में इनका देहांत हो गया।

गेराल्ड मौरिस एडल्मैन

पुरस्कार वर्ष : 1972
जन्म : 1 जुलाई, 1929
मृत्यु : 17 मई, 2014
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्हें रोडनी राबर्ट पोर्टर के साथ 1972 का नोबेल पुरस्कार दिया गया। इन्होंने इस बात को स्पष्ट करने का यत्न किया कि रोग प्रतिकारक अणुओं का रासायनिक ढांचा कैसा होता है। शरीर में रोगों से रक्षा करने वाले अणुओं की संख्या घटती-बढ़ती रहती है।

रोडनी राबर्ट पोर्टर

पुरस्कार वर्ष : 1972
जन्म : 8 अक्तूबर, 1917
मृत्यु : 8 सितंबर, 1985
राष्ट्रीयता : ब्रिटिश

इन्होंने शरीर में विद्यमान रोगों से रक्षा करने वाले अणुओं के संबंध में अध्ययन किया और बताया कि उन अणुओं की संरचना कैसी होती है। इन्हें गेराल्ड मौरिस के साथ भागीदार के रूप में नोबेल पुरस्कार मिला।

कोनराड लॉरेन्ज

पुरस्कार वर्ष : 1973
जन्म : 7 नवंबर, 1903
मृत्यु : 27 फरवरी, 1989
राष्ट्रीयता : आस्ट्रियन

लॉरेन्ज को इथॉलाजी अर्थात् जीव पारिस्थितकी या जीव आचार शास्त्र का जनक माना जाता है। इन्होंने जीवों की व्यवहार पद्धति के संबंध में अध्ययन किया। 1973 के पुरस्कार में दो अन्य वैज्ञानिक भी भागीदार थे।